राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 376
1297
1006
अश्वमणि
अश्वराज
इस कॉमिक्स के साथ अश्वराज का एक स्टीकर मुफ्त और इसी सैट की सभी छः कॉमिक्स खरीदने पर एक ज्योमैट्री-बाक्स मुफ्त
ALFA INVESTMENTS
(Snei Sandesh
Udaram Chowk Purani Abadi
SRI GANGANAGAR-33500
www.comics.animehood.net

अश्वमणि

लेखिका: मीनू वाही
सहयोग: तरुणकुमार वाही
सम्पादन: मनीष गुप्ता
कलानिर्देशन: प्रताप मुळीक
चित्रांकन: चंदू

1006/2
ALFA INVESTMENTS

जवाब में मिथुन ने बिछाया अपना तिलिस्म—
तोड़ूंगा अश्वराज, लेकिन तुम्हें साथ लेकर।
ओह! तुम्हारा भ्रम भी शीघ्र टूटेगा मिथुन!
इस बंधन की तरह!
अगर तुम महर्षि फूकमसान के शिष्य न होते तो इसी पल मृत्यु को प्राप्त होते।
और यह क्या? मिथुन के जिस्म से उसका नारी रूप अलग हो गया।
अश्वराज! मैं आधा नर हूं, आधा नारी! मेरे दोहरे आक्रमण से बचना!
मिथुन के नारी रूप ने किया घातक हमला—
ये जादुई विस्फोटक तुम्हारे मस्तिष्क को सुन्न कर देंगे अश्वराज!

मस्तिष्क तो तब सुन्न होगा न, जब ये विस्फोटक मुझ तक पहुंचेंगे।
सच ही तो कहा था अश्वराज ने —
धड़ाम
धड़ाम
धड़ाम
मिथुन का शक्तिशाली प्रहार था वह —
क्यों अश्वराज!
मुझसे भी बचना होगा तुम्हें अश्वराज!
अश्वराज न सिर्फ दोनों से बचा ही, बल्कि —
तड़ाक
क्षमा करना मिथुन! न चाहते हुए भी यह सब करना पड़ा मुझे।
मूर्छित होने से पूर्व ही मिथुन के नर-नारी रूप अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर चुके थे।

उस जंग का एक-एक दृश्य महर्षि फूंक-मसान की दिव्य दृष्टि से होकर गुजरा था—
मिथुन भी असफल हो गया अश्वराज को रोक पाने में।
उफ! महर्षि! मुझे तो लगता है कि अश्वराज को रोक पाना असम्भव है।
राजा चिन्तित सिंह की बात पर गम्भीर हो गई महर्षि की मुख-मुद्रा—
उसे रोकने का पूर्ण प्रयास करूंगा राजन! उसे रोकूंगा। उसे रोकूंगा मैं।
मिथुन के पश्चात अब मैं भेज रहा हूं महा पराक्रमी केंकड़ा ऋषि कर्क को।
घोर शंख में से प्रकट हुए केंकड़ा ऋषि कर्क—
राजा चिन्तित सिंह की चिन्ता बढ़ती जा रही थी—
क्या कर्क रोक पायेगा अश्वराज को?
घोरशंख छोटा होकर वापस महर्षि के हाथों में पहुंच गया—
राजन! जब तक कर्क अश्वराज तक पहुंचे, मैं तुम्हें बताता हूं सूर्यवंशियों और चन्द्रवंशियों के उस खौफनाक युद्ध का क्या अंजाम हुआ?
ओह! उस युद्ध का परिणाम जानने के लिए तो मैं भी बेचैन हूं महर्षि!

अश्वकीर्ती को लेकर तूफान की तरह उड़ा जा रहा था विलक्षण अश्व मानव अश्वराज का वह पांच घोड़ों का अद्भुत रथ–
इधर पागल सी हुई जा रही थी अश्वकीर्ती यह समाचार सुनकर–
अश्वराज! मेरी चिन्ता छोड़ो। पिताश्री भारी सेना के साथ सूर्यवंशी पर चढ़ाई कर चुके हैं।
सूर्यवंशी की धरती तुम्हारी मां है अश्वराज! मां की रक्षा का प्रथम कर्तव्य बनता है तुम्हारा।
तुम्हारी रगों में तुम्हें जन्म देने वाली मां के दूध के साथ इस मां का रक्त भी बह रहा है। उस रक्त को धरती मां पर क्यों न्यौछावर करने में इतनी देर, अश्वराज?
मोड़ दो रथ को रणभूमि की ओर! मैं खुद भी टकरा जाऊंगी उस तूफान से, जो प्रेम के पवित्र मंदिर को मकबरे में परिवर्तित करने को निकला है।
सचमुच रथ रोक दिया अश्वराज ने। जबड़े सख्ती के साथ भिंचे हुए थे उसके।

बुरी तरह चमक उठा अश्वकीर्ती का गुलाबी चेहरा–
मैं जानती थी अश्वराज, मैं जानती थी कि तुम ऐसा ही करोगे। मातृ-भूमि से अपने फर्ज को प्रेम पर कुर्बान नहीं करोगे तुम। तुम्हें पा कर धन्य हो गई अश्वकीर्ती! सच अश्वराज सच। लेकिन अरे!
यह क्या कर रहे हो?
कहां ले आए हो तुम मुझे?
तुम इस समय कारू की घाटी में हो अश्वकीर्ती!
कारू के खजाने के द्वार पर खड़ी हो तुम!
जहां तक पहुंचने के लिए खुद तुम्हारे पिता भी कई बार आक्रमण कर चुके हैं सूर्यवंशी पर००

और जहां आज तक मेरे सिवाए कोई दूसरा नहीं पहुंच सका है।
तुम दूसरी वो हस्ती हो अश्वकीर्ती, जो न सिर्फ खजाने के द्वार तक आ पहुंची है, बल्कि खजाने के दर्शन भी करेगी।
हैरत से फट गईं अश्वकीर्ती की हीरे सी आंखें---
क्या कह रहे हो अश्वराज? मैं तो समझी थी कि तुम ••• ?
मुझे मेरा फर्ज याद मत दिलाओ अश्वकीर्ती, क्यों-कि मैं उसे कभी भूलता नहीं।
ये वो जगह है जहां से केवल मैं ही तुम्हें बाहर निकाल सकता हूं या फिर निकाल सकती है मौत।
मेरे लौटने तक तुम्हें यहीं रुकना होगा अश्वकीर्ती!
यहां तुम सुरक्षित रहोगी।

और—
अगले ही पल हैरत व आश्चर्य के मिले-जुले भाव लिए फैल गईं अश्वकीर्ती की निगाहें।
सामने कारूं का खजाना जो था।
अतुल खजाने का विशाल भण्डार।
जैसा न कभी देखा, न सुना।
पलकें तक झपकाना भूल गई थी अश्वकीर्ती।
क्यों अश्वकीर्ती? चल गया खजाने का जादू!
सोने की तलवारें हीरों जड़ी ढालें। ओह! अश्वराज! सच। जैसा सुना था उससे बढ़कर पाया है इसे। अनमोल है ये खजाना। दुनिया का सबसे बड़ा खजाना।

अचानक कोषागार गूंज उठा घोड़े की तीव्र हिनहिनाहट से—
हिनऽऽऽऽ
रक्ताम्बर की आवाज!
अश्वदंट की आवाज भी गूंज उठी—
अश्वराज! संकट! रक्ताम्बर चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक को अपनी सेना के साथ इधर ही आते देख रहा है।
अश्वांतक?
बुरी तरह चौंक पड़ा अश्वराज—
अश्वांतक काल घाटी में? असम्भव!
अश्वराज की ओर देखती बड़े ही अर्थपूर्ण ढंग से मुस्करा पड़ी राजकुमारी अश्वकीर्ति—
क्या हुआ राजकुमार अश्वराज? पिताश्री अपनी विशाल सेना के साथ इधर ही आ रहे हैं तो इसमें इतना परेशान होने की क्या आवश्यकता है?
पागलों की तरह ठठाकर हंस पड़ी राजकुमारी अश्वकीर्ति। और फिर हंसती ही चली गई वो।
हा हा हा
हा हा हा
हा हा हा
बुरी तरह से छला गया था अश्वराज।

महर्षि फूंकमसान को एकाएक चुप हुआ देख रहा न गया राजा चिन्तित सिंह से—
आप चुप क्यों हो गए महर्षि ? आगे क्या हुआ, ये जानने के लिये मेरी बेचैनी बढ़ती चली जा रही है।
स्वयं को सम्भालो राजन ! क्योंकि कर्क अश्वराज के सामने पहुंच गया है।
क्या सचमुच अश्वकीर्ती अश्वराज से चाल चल रही थी या फिर कोई और रहस्य था ? यह मैं तुम्हें कर्क और अश्वराज के टकराव के पश्चात ही बता सकूंगा राजन !
महापराक्रमी केकड़ा ऋषि कर्क अश्वराज का रास्ता रोके खड़ा था—
कौन हो तुम ? अश्वराज के रास्ते मे क्यों खड़े हो ?
महर्षि फूंकमसान का एक और शिष्य कर्क तुम्हें वापस ले जाने आया है अश्वराज !
कर्क ने अश्वराज की कलाई दबोच ली—
अब तुम्हारी कलाई कटने के बाद ही छूट सकती है मेरे पंजे से।
कठोर हो गया अश्वराज का चेहरा—
अश्वराज तेरी कलाई ही काटकर फेंक देगा कर्क !
नहीं ! रुक जाओ अश्वराज !
चीखते हुए कलाई छोड़ दी उसने।

कर्क अश्वराज को रोकने के लिए कृत-संकल्प था—
इस घूंसे की चोट मूर्छित होने से न रोक सकेगी तुम्हें अश्वराज!
ओह!
ठाक
हैरान हो उठा केकड़ा ऋषि कर्क!
ओह! यह तो कर्क के रूप में परिवर्तित हो गया!
अब मेरा घूंसा भी तुम्हारे लिए उतना ही घातक हो सकता है केकड़ा ऋषि कर्क! बचना जरा!
ओह!
अश्वराज शीघ्र ही आ गया अपने वास्तविक रूप में—
बच नहीं सके ना कर्क!
अब जब तुम्हारी मूर्च्छा टूटेगी, अश्वराज तुम्हारी पकड़ से दूर निकल चुका होगा!

जादुई दर्पण पर वह दिलचस्प मुकाबला देखते तूताबूता और दादूबोरा की आंखों में थी एक अद्भुत चमक —
मिथुन के बाद कर्क की शक्ति काम न आई। हा--- हा --हा --।
देखा दादूबोरा, देखा! अब बोलो। लायेगा न ये कारूं का खजाना।
जरूर, जरूर!
महर्षि फुंकमसान के नेत्र भी चिन्ता की लकीरों के साथ सिकुड़ गये ---
आप एकाएक फिर गम्भीर हो उठे महर्षि! लगता है केकड़ा ऋषि कर्क भी असफल हो कर लौट रहा है।
परवाह नहीं राजन्, परवाह नहीं। सिंह की शक्ति अपार है। सिंह रोकेगा उसे।
अश्वराज को ले आने को विदा हुआ सिंह।
न जाने मेरी बच्ची किस हाल में कहां होगी?
उसकी फिक्र मत करो राजन्। कुछ नहीं होगा उसे। अश्वराज के रहते हुए कुछ नहीं हो सकता उसे।
और जब तक सिंह अश्वराज के सम्मुख पहुंचे, मैं तुम्हें सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो की युद्ध की उस तैयारी के विषय में बताता हूं।
तूताबूता और दादूबोरा के बारे में जानने के लिए अश्वराज सीरीज के पूर्व प्रकाशित कॉमिक 'अश्वराज' व 'कारूं का खजाना' अवश्य पढ़ें।

जैसे ही सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो को पता चला कि —
क्या ? अश्वांतक ने सूर्यवंशी पर चढ़ाई कर दी है।
भूकम्प सा नजर आने लगा सूर्यवंशी सम्राट के चेहरे पर—
उसे आने दो। आने दो उसे। सूर्यवंशी की सीमा में प्रवेश करने का बहुत बड़ा मूल्य चुकाना होगा उसे।
सेनापति घरघोड़ा! सम्राट अश्वांतक और उसकी विशाल सेना के स्वागत की तैयारी में कोई कमी न होने पाये।
गुप्तचरों को चप्पे-चप्पे पर फैला दो। दुश्मन कार्यप्रणाली की पल-पल की जानकारी हमें मिलनी चाहिए।

सभा बर्खास्त कर उठ खड़े हुए सम्राट तारपीड़ो—
महामंत्री! ये युद्ध अंतिम होगा सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी की सेनाओं के बीच!
और इस युद्ध को निर्णायक साबित करेगी अश्वमणि!
हम अश्वमणि यज्ञ करके अश्वमणि प्राप्त करने जा रहे हैं महामंत्री! शीघ्र ही लौटेंगे अश्वमणि लेकर, अश्वांतक की मौत का ऐलान करने!
उधर बुत सा बना खड़ा अश्वराज देख रहा था अश्वकीर्ती को पागलों की तरह हंसते हुए—
हाहाहा
हाहाहा
सहनशक्ति जवाब दे गई अश्वराज की---
अश्वकीर्ती! भगवान के लिए हंसना बन्द करो! ये क्या हो गया है तुम्हें अश्वकीर्ती? क्या हो गया है ये तुम्हें?
लोमड़ी की तरह मक्कारी उभर आई सुंदरी के मुखमण्डल पर—
तुम बेवकूफ हो अश्वराज! निरे मूर्ख! हा हा हा!

अश्वकीर्ती का ये रूप पागल किए दे रहा था अश्वराज को—
क्या मतलब?
सचमुच दीवाने हो तुम अश्वराज! जो मेरे अन्दर छिपी हुई लोमड़ी को न पहचान सके तुम! तुम पर दया आती है अश्वराज! सच बहुत दया आती है तुम पर!
अश्वराज का चेहरा गम्भीर, व स्वर कठोर हो उठा—
क्या बक रही हो अश्वकीर्ती?
देखो इस माला को! इसके मोती मैं रास्ते में गिराती आई हूं!
इन्हीं मोतियों ने मार्गदर्शक बनकर मेरे पिताश्री और उनकी सेना को कारूं घाटी पहुंचने में मदद की है।
अश्वकीर्ती के ये शब्द बिजली बनकर गिरे अश्वराज पर—
अश्वकीर्ती!
गद्दार!
तड़ाक
उफ़

खजाने के विशाल भण्डार पर गिर पड़ी अश्वकीर्ती—
हा हा हा! अश्वराज तुम बाजी हार चुके हो! तुम बाजी हार गए अश्वराज! हा हा हा!
एक झटके से अश्वकीर्ती के केश मुट्ठी में दबोचकर खूनी भेड़िये की तरह गुर्रा पड़ा महाबली—
अश्वराज की बाजी पलटते देर नहीं लगती विश्वासघातिनी!
तेरे पिताश्री और उनकी सेना की धज्जियां उड़ा देगी अश्वराज की तलवार!
हीरे-पन्ने जड़ी सोने की म्यान से खींच ली उसने तलवार—
मैं चाहूं तो सोने की इसी तलवार से काटकर तेरा सिर तोहफे में भेज दूं अश्वांतक को!
लेकिन! अभी वो पल नहीं आए अश्वकीर्ती! मेरे एक प्रश्न का जवाब अधूरा रह जायेगा, जिसके बिना न मौत आ सकेगी मुझे और न जी सकूंगा मैं।

क्रोध और नफरत का लावा उबल रहा था—
अपने उस प्रश्न का जवाब लेने मैं वापस आऊंगा अश्वकीर्ती! वापस आऊंगा!
अश्वराज वापस जाने के लिए पलट गया!
खनखना कर हंसी थी लोमड़ी—
तुम वापस नहीं आओगे अश्वराज! क्योंकि ... यहीं से न जा सकोगे तुम!
पलटते ही उसका चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो उठा—
ओह! पूरी तैयारी के साथ डसने आई है नागिन!
अश्वराज!

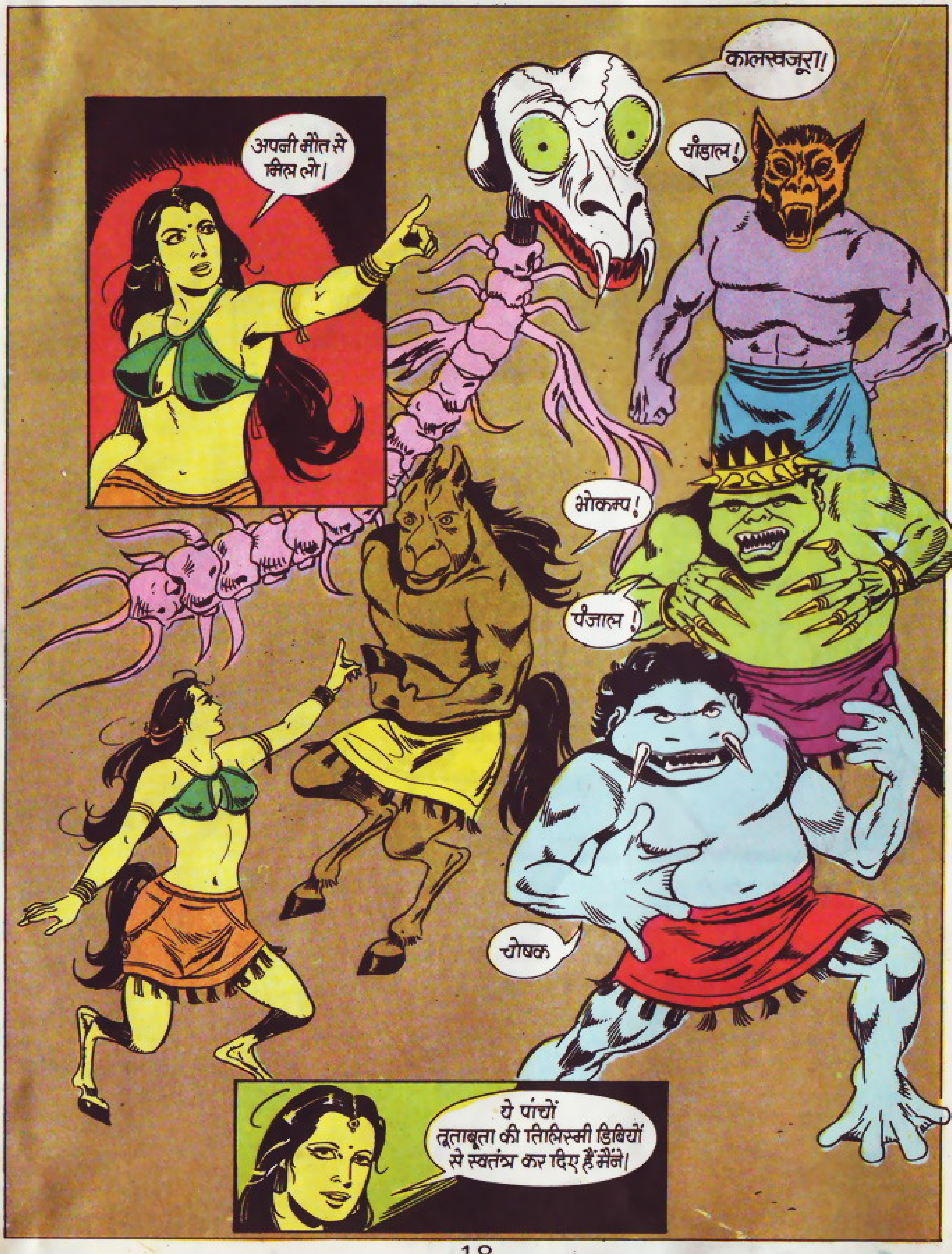
अपनी मौत से मिल लो!
कालखजूरा!
चांडाल!
भोकम्प!
पंजाल!
चोषक
ये पांचों तूताबूता की तिलिस्मी डिबियों से स्वतंत्र कर दिए हैं मैंने!

और अब ये पांचों मिलकर कारूं की घाटी को तुम्हारी कब्र में बदल देंगे अश्वराज!
बचो कालखजूरा से! ये जहां चिपकता है! खून पी जाता है वहीं से...
...शरीर के उस अंग को लकवा मार जाता है।
इसके खून से मेरी प्यास नहीं बुझने की राजकुमारी!
कालखजूरा की खौफनाक पकड़ से बाल-बाल बचा था अश्वराज!
जल्दी ही कुछ करना होगा! अश्वांतक की सेना के यहां पहुंचने से पूर्व ही!
चांडाल मांस नोंच खाएगा तुम्हारा अश्वराज!
ही ही ही
चांडाल ने सचमुच नोंच खाया अश्वराज का मांस—
ही ही ही! कच्चा मांस बिना मसाले के ही खाता हूं मैं! ही ही ही!

हल्की सी भी कराह तक न निकली 'कठोर' के मुंह से!
पर खून उलट आया था चेहरे पर।
फुर्ती से उठकर खड़ा ही हुआ था अभी कि—
खच्च
ओह!
दरिन्दों से घिर गया था एक अकेला—
पंजाल से तुझे मौत भी नहीं बचा सकती।
पंजाल से छूटा तो भोकम्प ने जकड़ लिया—
भोकम्प के एक घूंसे से धरती का सीना पानी की धार उगल देता है।
तेरा जिस्म खून उगलेगा हा-हा-हा...
धड़ाक

चोषक भी आया—
पशु और मानव की आंतें हैं मेरा भोजन, जिन्हें अपने दो दांतों से फाड़ डालता हूं मैं।
अश्वराज को अपनी पूरी ताकत लगा देनी पड़ी। उसके भयानक दांतों को अपनी ओर बढ़ने से रोकने के लिए।
पीछे से पड़ी भोकम्प की जबरदस्त ठोकर—
ठाक
अब आयेगा अश्वराज से लड़ाई का मजा।
कर्कश थी वो हंसी अश्वकीर्ती की—
हा हा हा हा! नहीं जीत पाओगे अश्व-राज नहीं जीत पाओगे।
इस बाजी को नहीं पलट पाओगे तुम। ये बाजी तो अश्वकीर्ती की मुट्ठी में है।

इतना कहने के साथ ही महर्षि फूकमसान एकाएक ही पुनः चुप हो गए —
ओह! लगता है 'सिंह' अश्वराज तक जा पहुंचा है!
तुम ठीक सोच रहे हो राजन!
लेकिन इस लड़ाई में एक सबसे बड़ी समस्या ये है कि दोनों प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे पर प्राण-घातक आक्रमण नहीं कर पा रहे, बल्कि हल्के प्रहारों के साथ केवल अपना बचाव ही कर रहे हैं।
सिंह भी कुछ ऐसा ही करेगा
रुक जाओ अश्वराज!
कौन?
महर्षि शिष्य, सिंह! अपने चारों ओर निगाह दौड़ाओ अश्वराज!...
...तुम घिर चुके हो।

शेरों के आक्रमण का तुरन्त ही जवाब दिया अश्वराज ने —
तुम भी आओ जंगल के राजा।
महर्षि शिष्य ...सिंह! संभालो अपने अंगरक्षकों को।
एक बार फिर रथ से नीचे उतर आया अश्वराज 'सिंह' को परास्त करने के लिए —
मैं जानता हूं कि तुमसे युद्ध किए बिना मैं एक कदम भी और नहीं बढ़ा सकता।
इस युद्ध को टाला भी जा सकता है अश्वराज!
नहीं! नहीं टाला जा सकता सिंह! क्योंकि युद्ध टलने की जो शर्त तुम रखोगे, वो मुझे मान्य न होगी, इसलिए युद्ध तो होगा ही! राजकुमारी कुदुमलुम्बी को प्राप्त करना मेरा एकमात्र ध्येय है, सिंह!
एक-दूसरे को परास्त कर देने के लिए लड़ रहे थे दोनों शेर!
और तुम्हें महर्षि के पास वापस ले जाना मेरा, अश्वराज!

फौलादी पकड़ थी दोनों की ही —
कोई भी कम न था —
उफ़्!
दोनों योद्धा फिर आमने-सामने हुए। और इस बार अश्वराज ने एक भरपूर ठोकर से उछाल फेंका सिंह को —
आह!
मूर्च्छित तो न हुआ सिंह, किन्तु मस्तिष्क झनझना उठा उसका —
उफ़
इतना समय काफी था अश्वराज के लिए —
अब किसे भेजेंगे महर्षि मेरी राह रोकने को?

महर्षि फूकमसान —
उफ! सिंह की शक्ति पर भरोसा था मुझे।
इसका ... इसका मतलब कि सिंह भी परास्त हो गया अश्वराज से।
हां राजन! लेकिन इस बार कन्या ... हां, कन्या पर हाथ नहीं उठा पायेगा अश्वराज! वह परास्त हो जायेगा राजन!
गजब की चमक उभर आई महर्षि की आंखों में—
कन्या उसे परास्त कर देगी।
जादुई-दर्पण पर दृश्य तेजी से पलट रहे थे। जिन्हें देखते हुए तूताबूता और दादूबोरा के चेहरे भी प्रसन्नता से दमक रहे थे—
शाबाश अश्वराज! तुम्हारी मंजिल अब अधिक दूर नहीं है।
लेकिन महान तूताबूता! एक बात अभी तक मेरी समझ में नहीं आई।
हैरानी हुई तूताबूता को—
कौन सी बात दादू?
आप अश्वमणि का क्या करोगे?

भड़क उठा तूताबूता एकाएक ही।
दादूबोरा!
म... मुझसे कोई गुस्ताखी हो गई हो तो मुझे क्षमा करें महान तूताबूता!
बहुत बड़ी गुस्ताखी हुई है तुमसे! आज के बाद मुझसे ऐसा कोई भी प्रश्न तुम्हारी मृत्यु का कारण बन सकता है दादूबोरा!
बेचारे दादूबोरा की तो सिट्टी-पिट्टी ही गुम थी—
क्षमा महान तूताबूता! अब ऐसा तो क्या, कैसा भी प्रश्न नहीं करूंगा! आप अश्वमणि से चाहे भुट्टे भूनें, मुझे तो कारू के खजाने से मतलब है!
इसी में तुम्हारी भलाई है दादू!
वहहह! ये अश्वराज कब पहुंचेगा खजाने तक?
उधर राजा चिन्तित सिंह के मस्तिष्क में उमड़-घुमड़ रहे थे कई सवाल—
उसके बाद क्या हुआ महर्षि? क्या सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो अश्वमणि प्राप्त करने में कामयाब हो गए?
विश्वासघातिनी राजकुमारी अश्वकीर्ती के तिलिस्म से बच सका क्या अश्वराज?
क्या अश्वांतक अपनी सेना लेकर वहां आ पहुंचा?

इन सब प्रश्नों के उत्तर अभी अधूरे हैं महर्षि!!
रहस्यों का तूफान हैं ये प्रश्न राजन्! जिनके उत्तर स्वतः ही मिलते चले जाएंगे तुम्हें।
सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो अश्वमणि के लिए कठोर यज्ञ कर रहा था—
अश्वमणि! अश्वमणि! अश्वमणि!
हथेली फैला रखी थी उसने।
अश्वमणि! अश्वमणि! अश्वमणि!
प्रकट हुई अश्वमणि!
इसी के साथ गायब हो गयी तारपीड़ो के जिस्म में धंसी सलाखें।
अति पीड़ादायक तपस्या का अंत किया तारपीड़ो ने—
मेरी तपस्या सफल हुई। ये अश्वमणि बरसों से ऐसे ही गम्भीर संकट के समय सूर्यवंशी की रक्षा करती रही है।

अश्वमणी आज भी रक्षा कवच बनेगी सूर्यवंशियों का।
सेनापति घरघोड़ा उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था—
सम्राट की जय हो। सम्राट, सेना कूच के लिए तैयार है। केवल आपके आदेश की प्रतीक्षा है।
ओह!
तब फिर देरी किस बात की। कूच करो सेनापति कूच करो। विजय हमारी ही होगी।
विशाल सेना ने कूच किया—
आज के बाद दुनिया अश्वांतक के नाम को भूल जायेगी।
आओ बढ़ो बहादुर सिपाहियो।
सेना में एक उत्साह था। एक उत्तेजना थी। हर कोई देश के लिए जान की बाजी लगाने को आतुर लग रहा था....

••• कि अचानक! खुद सम्राट तारपीड़ो द्वारा रोक दिया गया वह सैलाब —
ठहरो!
महाराज! हमारे गुप्तचर हैं ये। क्या समाचार लाए होंगे?
गुप्तचर ठीक वहीं पहुंचकर रुके।
क्या समाचार लाए हो गुप्तचर?
स••• सम्राट! दुश्मन ने बड़ी अजीब हरकत कर दी है।
बेहद गम्भीर था सूर्यवंशी सम्राट —
हम समझे नहीं।
सूर्यवंशी पर चढ़ाई करने का आदेश देकर स्वयं अपने नेतृत्व में दुश्मन सम्राट अश्वांतक सूर्यवंशी की ओर रवाना हुआ था मगर•• •• मगर?
मगर क्या?
एकाएक ही दुश्मनों की फौजों ने अपना मार्ग परिवर्तित कर दिया। सूर्यवंशी के विपरीत जा रही हैं दुश्मन की फौजें।
फौजें सूर्यवंशी के विपरीत जा रही हैं? असम्भव।

चकरा गया सेनापति घरघोड़ा भी–
इस बात में क्या भेद हो सकता है सम्राट?
एक समाचार और भी है महाराज!
राजकुमार अश्वराज, राजकुमारी अश्वकीर्ती को अपने रथ में बिठा कर उत्तर की ओर न जाने कहां गए हैं?
और अब उसी दिशा में जा रही हैं दुश्मन की फौजें भी।
इतना सुनते ही उछल पड़े सम्राट तारपीड़ो। चेहरा वीभत्स होता चला गया उनका–
उत्तर की ओर। उफ! अश्वकीर्ती को लेकर अश्वराज को उत्तर की ओर जाने की क्या आवश्यकता थी और अश्वांतक उत्तर की ओर क्यों गया है उसके पीछे?
क्या खेल खेल रहा है अश्वांतक? हमें उसके पीछे जाना होगा। अश्वराज के प्राण संकट में हैं। उफ!
(क्रमशः)
इस सनसनीखेज अति रोमांचक, रहस्य से परिपूर्ण कॉमिक शृंखला का अगला भाग पढ़ना ना भूलें। अश्वराज की कालखजूरा, चांडाल, पंजाल, भोकम्प और चोषक से भयानक टक्कर, जो आपके दिलों में तूफान पैदा कर देगी। महर्षि फूंकमसान, राजकुमारी अश्वकीर्ती, राजकुमारी कुदुमछुम्बी का रहस्यमय संसार आपके मस्तिष्क हिलाकर रख देगा। पढ़ें 'तिलिस्म का खिलाड़ी'